विषय-सूची

प्रथमोऽध्यायः (पृ० १-३१)

मन्त्र (१) परमेश्वर से अन्न, बल की प्रार्थना। रोगरहित पशु सम्पत्ति की इच्छा। दुष्ट पुरुषों का नाश। (२) प्रभु से तेजोवृद्धि की प्रार्थना। (३) सहस्रधार और शतधार वसु। (४) विश्वकर्त्री और विश्वधात्री शक्ति। (५) व्रतपत्ति का आराधन। (६) सर्वनियोजक प्रभु। (७-९) दुष्टों का दमन। (१०) अन्न, ऐश्वर्य की प्राप्ति। (११) दुष्ट संतापक अग्नि रूप राजा, (१२) राजा और नेताओं के कर्त्तव्य। (१३) नेता का वरण, प्रोक्षण, दीक्षा, और त्रुटियों का दूर करना। (१४) राजा के दुष्टों के दमन कर्त्तव्यों का मुसल और पाषाण के दृष्टान्त उपदेश सें। (१५) अन्न आदि की उत्पत्ति। (१६) दुष्टों का न्यायविभाग द्वारा अपराधविवेचन, दमन। (१७,१८) शत्रुवध। (१९) प्रजाओं की रक्षा। (२०) राष्ट्र के दीर्घ जीवन के लिये राष्ट्रपति की स्थापना। (२१) योग्यों से योग्यों के मिलने का उपदेश। (२२) पतिपत्नी के दृष्टान्त से राष्ट्र का वर्णन। (२३) राजा और पुरुष को कार्यकाल में निर्भय होने का उपदेश। (२४) विद्युत्-अस्त्र से शत्रुओं का नाश। (२५,२६) राजा का पृथ्वी के प्रति कर्त्तव्य। (२७) राष्ट्र के ब्रह्म क्षत्र, की वृद्धि। पृथ्वी का वर्णन। (२८) युद्ध-यज्ञ। (२९, ३०) दुष्टों के दमनार्थ सेना। (३१) आयुधों का स्वरूप।

द्वितीयोऽध्यायः (पृ० ३२-६३)

(१) प्रजावृद्धि के लिये राजा, यज्ञ, गृहस्थ का अभिषेक। (२) राजा आदि का स्वागत। (३) तेजस्वी विद्वान्, मित्र और वरुण और राजा के कर्त्तव्य। (४) विद्वान् अग्रणी और परमेश्वर की स्तुति। (५) तेजस्वी राजा। (६) ब्रह्माण्ड और राष्ट्र की तीन बड़ी शक्तियां। राजा, अधिकारी

और प्रजाओं का अधिकार। (७) राजा का अभिषेक, राष्ट्र चालकों के वेतन स्वधा। (८) परमेश्वर और राजा की आज्ञा का पालन। (९) दूतस्थापन, सत्पुरुष रक्षा, ऐश्वर्य प्राप्ति। (१०) आत्मबल, सत्य आशीर्वाद, और ज्ञान की याचना। (११) उत्तम माता पिता की शिक्षा की प्राप्ति और उत्तम स्वास्थ्य। (१२) यज्ञपति की रक्षा। (१३) यज्ञ सम्पादन। (१४) अग्नि स्वरूप तेजस्वी पुरुष और उसके अधीनों की वृद्धि। (१५) विजय ऐश्वर्यवृद्धि, द्वेषी पुरुष का पराजय, युद्धोपयोगी सेना-बल। (१६) राजा का अभिषेक, उसकी रक्षा, राज्य की प्राप्ति। तथा आधिभौतिक यज्ञ। (१७) (१८) राष्ट्र की सीमा रक्षा। (१९) अग्नि और वायु दो अधिकारी। (२०) दुःख, अविद्या, पाप से रक्षा, सुख शान्ति, उत्तम ज्ञान की प्राप्ति। (२१) वेदमय देव। (२२,२३) आधिभौतिक यज्ञ और राष्ट्र। (२४) शुद्ध मनन शक्ति, तेज और ऐश्वर्यों और शुद्धि की प्रार्थना। (२५) राष्ट्र में व्यापक राजशक्ति। (२६) तेज और बल की प्रार्थना। (२७) उत्तम गृहस्थ। (२८) व्रत-पालन। (२९) उत्तमों का पालन और दुष्टों का दमन। (३०) नीच लोगों का निर्वासन। (३१,३२) वृद्धजनों की प्रसन्नता और आदर। ३३. उत्तम सन्तान लाभ, उत्तम पुरुष निर्माण। (३४) पिता, माता, वृद्ध जनों का तर्पण।

तृतीयोऽध्यायः (पृ० ६४–१०४)

(१,४) यज्ञ, अग्निचर्या और ईश्वर–उपासना। (५) अग्न्याधान, राज-स्थापन और गृहस्थ कर्म। (६-८) सूर्य और पृथ्वी। (९.१०) प्रातः सायं हवन में ईश्वरउपासना और भौतिक तत्त्व। (११) उत्तम मन्त्रोपदेश। (१२) सूर्य, राजा और परमेश्वर। (१३) विद्युत् अग्नि तथा राजा और सेनानायक। (१४) उच्चपद। (१५) राजा और विद्वानों का संग। (१६) शक्तियों का दोहन। (१७,१८) दीर्घ जीवन की प्राप्ति। (१९) तेज की प्राप्ति। (२०) उत्तम अन्न। (२१,२२) प्रजाओं और

पशुओं की सम्पदा। (२३) ईश्वर और राजा। (२४) परमेश्वर के समान प्रजा के प्रति पिता के तुल्य राजा। (२५) उसका कर्त्तव्य। (२६) ज्ञान, न्याय, दुष्टदमन। (२७) राजा का उत्तम संकल्प। (२८) योग्य की नियुक्ति। (२९) राजा के कर्त्तव्य। (३०) रक्षा की प्रार्थना। (३१) व्यवस्थित राष्ट्र। (३२) दमन का लक्ष्य। (३३) विद्वानों के लक्षण। (३४) राजा का कर्त्तव्य। (३५) पापनाशक परमेश्वर राजा। (३६) राजा का अपराजित रथ। (३७) प्रजा, पशु, अन्न की रक्षा। (३८) सम्राट् और (३९) गृहपति राजा के कर्त्तव्य, (४०) नेता विद्वान् का कर्त्तव्य, (४१,४२, ४३) गृहपति, गृहजनों, प्रजा और अधिकारी जनों का परस्पर सद्भाव, अभय होना। (४४) विद्वानों का आमन्त्रण, दुश्चरित्रत्याग। (४७) कर-व्यवस्था। (४७) श्रम, और वेतनों की व्यवस्था। (४८) राजा के कर्त्तव्य। (४६) वृद्धि। (४५) (५४) दीर्घजीवन के लिये ज्ञानवृद्धि। (५५) ज्ञान और दीर्घायु। (५६) ज्ञान, प्रजासम्पत्ति (५७) राजा के हाथ पांव श्रमी। (५८) दुःखनाशक उपाय। (५९) सब प्राणियों का सुख और रोगनाश। (६०) बन्धनमोचन। (६१) वीरों का कर्त्तव्य। (६२) त्रिगुण आयु। (६३) घातक कारणों से प्रजा की रक्षा॥

चतुर्थोऽध्यायः (पृ० १०४-१४३)

(१) देवयजन की बाधाओं से रक्षा। (२) आप्त जनों के कर्त्तव्य, दीक्षा और तप; (३) राजा का कर्त्तव्य। (४) देव से पवित्रता की प्रार्थना। (५) आशीर्वाद की याचना। (६) यज्ञ का व्रत, पांच यज्ञ। (७) अध्यात्म, आधिभौतिक यज्ञ (८) ईश्वर और राजा का वरण, ऐश्वर्य की प्राप्ति। (९) यज्ञसमाप्ति तक रक्षा प्रार्थना। (१०) बल, शरण, कृषि। (११) व्रताचरण, प्रजा और दीर्घायु, रक्षा। (१२) वीर्यरक्षा, प्रजापालन। (१३) जलों के दृष्टान्त से आप्त पुरुष। (१४)

पञ्चमोऽध्यायः (पृ० १४४-१८८)

और (३९) सेनापति, के कर्त्तव्य। (४०) (४३) गुरु शिष्य और राजा और प्रजा के परस्पर व्रत पालन की प्रतिज्ञा।

षष्ठो ऽध्यायः (पृ० १८८-२२७)

(१) शत्रुओं का नाश। (२) राजा, सभाध्यक्ष के कर्त्तव्य। (३) राजगृहों का वर्णन। (४,५) ईश्वर और राजा के कर्म। (६,७) राजा के अधिकार। (७) विद्वानों और राजा का सम्बन्ध। (८) समृद्ध प्रजा और राजा। (९) राजा का अभिषेक व्रत। (१०) दीक्षा। (११) स्त्री पुरुषों का कर्त्तव्य। (१२) सदाचार, शिष्टाचार। (१३) कन्याओं का पात्रों में प्रदान, उत्तम शासक का शासन। (१४) वाक्, प्राण, चक्षु आदि का व्रतदीक्षा में परिशोधन। (१५) मन आदि की शक्ति वृद्धि। (१६) दुष्टों और दुष्ट भावों का दूरीकरण। (१७) पाप, मल-परिशोधन। (१८) परस्पर प्रतिज्ञा, अन्न का स्वरूप, गुरु शिष्य और राजा प्रजा के सम्बन्ध। (१९) परम तेज का कारण, (२०) शरीर में प्राण के समान राजबल। (२१) ईश्वर से प्रार्थना, सेनापति को आदेश। (२२,२३) राजा प्रजाजन के प्रति कर्त्तव्य। (२४) स्वयंवर। प्रजाओं का स्वयं राजा का वरण। (२५) स्वयंवर के प्रयोजन। (२६) राजा की स्थिति और सेवा कार्य। (२७) प्रजाजनों के कर्त्तव्य। (२८) वैश्य प्रजा और गृहस्थ के कर्त्तव्य। (२९) योद्धाओं की वृत्ति। (३०) प्रजा का कर्त्तव्य। (३१) पांच योग्य शासक। (३२, ३४) राजा व प्रजा के कर्त्तव्य। (३५) राजा प्रजा का परस्पर अभय, (३६) परस्पर परिचय। (३७) राजा का स्वरूप, ईश्वर स्तुति।

सप्तमोऽध्यायः (पृ० २२८-२७८)

(१) आज्ञापक और आज्ञापद और गुरु शिष्य का सम्बन्ध। (२) परस्पर आत्मसमर्पण। (३) राजा का सूर्यपद। (७) वायु-प्राण वत् राजा। (८) सेनापति और न्यायकर्त्ता। (९) मित्र और वरुण अध्यापक

और अध्येता। (१०) मित्र वरुण, ब्राह्मण और क्षत्रिय। (११) सूर्य चन्द्र-वत् राजा प्रजा के सप्रेम व्यवहार। (१२, १३) मदमत्तों के दमन योग्य अधिकारी—योगी। (१४) राजा की उच्च स्थिति, ईश्वर और आचार्य। (१५) राजा और उसके सहायक। (१६) बालकवत् राजा और चन्द्र (१७) आक्रामकों के नाशक पुरुष की नियुक्ति । (१९, २०, ३३) मुख्य पदों पर सर्वोच्च अधिकारी। (२१) सोम, राजा। (२२) इन्द्र पद। (२३) मित्र और वरुण पद। (२४) वैश्वानर सम्राट्। (२५) सम्राट् का अभिषेक। (२६) उच्चपद। (२८) शरीर के अंग और प्राण-वत् राज्यांग। (२९) अधिकारियों का राजा से परिचय। (३०) संवत्सर के ऋतुओं, मासों के समान राज्यपद विभाग। (३१, ३२) नायक और सेनापति के इन्द्र और अग्नि पद। (३३, ३४) विद्वान् पुरुषों की नियुक्ति। (३५, ३६, ३७, ३८) मरुत्वान् इन्द्र, सेनापति। (३९, ४०) महेन्द्र पद, (४१, ४२) जातवेदा, राजा और परमेश्वर और सूर्य। (४३) मार्गदर्शक विद्वान् और परमेश्वर। (४४) प्रजाओं और सेनाओं का विभाग, प्रजाओं का निरीक्षण और व्यवसाय। (४५) उत्तम पुरुष की नियुक्ति। (४६, ४७) अधीन पुरुषों को स्वर्णादि दान।

अष्टमोऽध्यायः (पृष्ठ २७८–३२८)

(१) राजा का नियन्त्रण तथा अधिकार। पक्षान्तर में विवाहित गृहस्थ। (२) राजा का वैश्यों पर अधिकार और गृहस्थ के कर्त्तव्य। (३) मेघ के समान राजा। चतुर्थाश्रमी गृहस्थ को उपदेश। (४, ५) विद्वान् और गृहस्थ पुरुषों के कर्त्तव्य। (६) उत्तम ऐश्वर्य की प्राप्ति। (७) सावित्र पद। (८) विद्वानों पर योग्य पुरुष। पक्षान्तर में गृहस्थ। (९) प्रजा का कर्त्तव्य, राष्ट्र की ऐश्वर्यवृद्धि। पत्नी का कर्त्तव्य। (१०) राजा प्रजा तथा पति पत्नी का ऐश्वर्य भोग। (११) सारथि के समान संचालक पुरुष, राज्यतन्त्रवत् गृहस्थ तन्त्र। (१२) राजा के अधीन

प्रजा को राष्ट्र भोग। (१३) प्रजा के दोषों को दूर करना। (१४) उत्तम वैद्य। (१४) उत्तम नेता। (१५—१७) अधिकारियों और (१८, १९) प्रजाओं के कर्म। (२०) उत्तम पुरुष को उच्च पद। (२१,२२) राष्ट्रपति के कर्त्तव्य। (२३) ऋजु मार्ग। (२४) प्रत्येक गृह में विद्वान् की योजना। (२५) गृहपति, यज्ञपति, राष्ट्रपति का स्वागत। (२६) आप्त प्रजाओं और उत्तम गृहपत्नियों के कर्त्तव्य। (२७) प्रजा का दोष-परित्याग। (२८,२९) राजा की गर्भ से उपमा। (३०) वशा नाम राज्यशक्ति का वर्णन। नाना पदों वाली वेदवाणी। (३१) उत्तम रक्षक। (३२) राजा प्रजा और पति पत्नी। (३३, ३४, ३५ ३६,,) षोडशी इन्द्र। (३७) सम्राट् राजा। (३८) अग्नि, आचार्य, और नेता। (३७, ३९) इन्द्र पद पर बलवान् पुरुष। (४०) तेजस्वी सूर्य-वत् राजपद। (४१) पत्नी और पृथ्वी का योग्य पालक पति का धारण। (४२) गौ, स्त्री, पृथिवी के गुण। (४३,–४५) शत्रुमर्दक और विश्वकर्मा इन्द्र। (४७) राजा, इन्द्र। (४८) राजा, इन्द्र। (४८) राजा को भय-प्रदर्शन। (४६, ५०,) सावधान रहने योग्य राजपद। (५१) शासकों का कर्त्तव्य। दीर्घजीवन और मोक्ष का ध्येय। (५३) पर्वत और सूर्यवत् सेनापति। (५४, ५९) प्रजापति के भिन्न २ रूप। पक्षान्तर में सोमयाग। (६०, ६१) यज्ञ और राष्ट्र।

नवमोऽध्यायः (पृष्ठ ३२९–३६६)

(१) राष्ट्रमय यज्ञ। (२, ३, ४,) इन्द्र की स्थापना। (५) विजयी पुरुष का सर्वोपरि पद। (६) जल-ओषधि के समान राजा। (७) वायु, मन, गन्धर्वों के समान वेगवान् अश्व, शिल्पयन्त्र। (८) वेगवान् सेनापति। (१०) उत्तम शासन में सुख। (११, १३) सैनिकों को उपदेश। उनका विजय में सहयोग। (१४, १७) अश्वा-रोहियों के कर्त्तव्य। आज्ञाश्रवण और संचालन। (१८) उत्तम मार्गों से

गमन और रक्षा। (१९) सैनिकों की पवित्र दीक्षा। (२०-२१) मासों के तुल्य प्रजापति के १२ स्वरूप। (२१) यज्ञ के आयु, प्राण आदि की प्राप्ति। (२२) ऐश्वर्य वृद्धि। माता पृथिवी का आदर, राष्ट्र-शक्ति के नियम और कृषि सम्पत्ति। (२३) प्रजा की सम्पत्ति और शासकों को अप्रमाद का उपदेश। (२४, ५५) प्रजापालक का कर्त्तव्य। (२६, २७) मुख्य विद्वान् ब्राह्मण की सर्वोपरि स्थापना। (२८, २९) विजयी नेता और न्यायाधीश के कर्त्तव्य। (३०) राजा का अभिषेक। (३१-३४) १७ प्रकार के अक्षय बलों से राष्ट्र का वशीकार। (३४, ३६,) राजा और उसके नाना प्रकार के नायक। (३६) शत्रु विजय। (३८) दुष्ट वध। (३९, ४०,) इन्द्र आदि की स्थापना और सिंहासनारोहण।

दशमोऽध्यायः (पृष्ठ ३६५-३६८)

राज्याभिषेक (१) अभिषेक योग्य जलों की प्रजाओं से तुलना। (२-४) प्रजातुल्य जलों से राज्याभिषेक। सिंहासनारोहण। राजा की तेजस्विता। (६, ७,) राजोत्पादक प्रजाएं। (८) बालकवत् राजोत्पति। (९) गृहपति और राष्ट्रपति। (१०-१४) दुष्ट-नाश। राज-रक्षा। (१५) राजा की शोभा। (१६) सूर्योदयवत् मित्र और वरुण का उदय, सिंहासनारोहण। (१७) ऐश्वर्य और तेज से अभिषेक। (१८) राज्याभिषेक प्रस्ताव। (१९) अभिषेक वर्णन। (२०) अधिकार दान। (२१) योग्यता और अधिकार। (२२) राष्ट्र संयमन। (२३, २४,) राज-प्रतिष्ठा और स्तुति। (२५) ईश्वरार्पण। (२६) राजगद्दी। (२७) सम्राट् वरुण। (२८) उसके कर्त्तव्य। (२९) योग्य मध्यस्थ पुरुष। (३०) उन्नतपद। (३१) बल परिपाक का उपदेश। (३२) अन्न के दृष्टान्त से शत्रु नाश, और राष्ट्रसाधन। (३३) स्त्री-पुरुषों के कर्त्तव्य। (३४) राष्ट्र के व्यापक शक्तिमान् को मुख्याधिकार।

(एकादशोऽध्यायः (पृष्ठ ३६८-४६०)

अग्रणी नायक परमेश्वर, आदित्य योगी। सात्विक ज्ञानी राजा के कार्य। (२) योगद्वारा ज्ञान प्राप्ति। राजा का कर्त्तव्य। (३, ४) ज्ञानी पुरुष और राजा का कर्त्तव्य। (५) विद्वानों से ज्ञान का श्रवण। (६) नेता अग्रणी, परमेश्वर और राजा। (७) विद्वान् नेता और प्राण शक्ति। (८) क्षत्रपति। (९, १०) वज्र, नररत्न और वाणी का वर्णन। तेजस्वी होने का उपाय। (१२) उत्तम और न्यायकारी पद। (१३) दो उत्तम अधिकारियों की नियुक्ति। (१४) ऐश्वर्यवान् पुरुष को उच्च पद। (१५) गणपति पद की योजना। (१६) तेजस्वी, समृद्ध नेता। (१७) सूर्य और विद्वान्। (१८) विद्वान् नेता की योग्य अश्व से तुलना। (१९) वीर नेता। (२०) राजा का विराट् रूप। उसको आदेश। (२१) उत्तम नररत्नों की उत्पत्ति। (२२, २३) नेता का आदर। (२४) राजा को अग्नि के समान तेजस्वी बनाना। (२५) अग्नि सेनापति। (२६) वीर पुरुषों की नियुक्ति। (२७) अग्नि सेनापति। (२८) नेता का प्राप्त करना। (२९) नायक की समुद्र से तुलना (३०) राजा प्रजा का सम्बन्ध। (३१) गृहस्थ के समान राजा। (३२) नेता अग्नि। (३३) वृत्रहन्ता नेता। (३४) विजयार्थ उत्तेजना। (३५) योग्य पदाधिकारी। (३६) होतृ पदपर विद्वान्, उसके लक्षण और कर्त्तव्य। (३७) अग्नि नेता और राजा को उपदेश। (३८) प्रजाओं के कष्ट निवारण। (३९) विदुषी स्त्री, और प्रजा का कर्त्तव्य। (४०) राजकीय पोशाक प्राप्ति। (४१) आदरणीय उन्नत पद। (४२) सूर्यवत् राजा। (४३) गर्भगत बालकवत् नवाभिषिक्त राजा। अश्ववत् दृढ़, राजा, ऐश्वर्यवान्, आशुकारी। (४५) राजा का प्रजाओं के लिये कल्याणकारी, कृपालु होना। (४६) तेजस्वी राजा की विद्युत् वाले मेघ से तुलना। (४७) राजा

सेनापति और वीर सैनिकों की वायु और ओषधियों से तुलना। (४८) (४८) ओषधि और प्रजा। (४९) प्रजा गृहपत्नी। (५०-५१,५२) आपः, जलों, विद्वानों और स्त्रियों के कर्त्तव्य। (५३) प्रजाओं के आरोग्य के लिये उत्तम विद्वान् की नियुक्ति। (५४) सूर्यरश्मियों से वीर सैनिकों और विद्वानों की तुलना। (५५, ५६,) सिनीवाली, स्त्री, प्रकृति, राजसभा और ब्रह्मशक्ति। (५७) हांडी के तुल्य पृथ्वी। मानवों की उत्पत्ति की भूमि और स्त्री (५८) वसु, रुद्र, आदित्य विद्वानों, निवासियों, शासकों, और व्यापारियों के कर्त्तव्य। (५९) विदुषी माता। (६०) वसु आदि विद्वानों का कर्त्तव्य। (६१) राजसभा, राजा और सभापति और विदुषी माताओं का कर्त्तव्य। (६२) प्रजा, पृथिवी, और स्त्री का अधिकार। (६३) योग्य पति और राष्ट्रपति। (६४) पृथ्वी और स्त्री। (६५) विद्वानों का कर्त्तव्य। (६६) आत्मिक शक्ति और उनके प्रयोग। (६७) ऐश्वर्य के निमित्त ईश्वर और राजा का आश्रय। (६८) पतिपत्नी और राजा प्रजा का कर्त्तव्य। (६९) पृथिवी, उखा और आसुरी माया, स्त्री और राष्ट्रप्रजा। (७०) वीर्यवान् और तेजस्वी पुरुष। (७१) स्वयंवर का सिद्धान्त, राजा का निर्बलों की रक्षा का कर्त्तव्य। (७२) अग्नि, पति और राजा। (७३) दूरस्थ शत्रुओं की विजय। (७४) तुल्य उपजापकारिणी संस्था वम्री। (७५) अश्व के तुल्य राजा का पोषण। (७६) वेदि में अग्नि के समान पृथ्वी पर राजा का स्थापन और वर्धन। (७७) राजा का आग्नेय रूप। (७८, ७९) दांतों और दाढ़ों के दृष्टान्त से दुष्टों का दमन। (८०) शत्रु-नाश। (८१) ब्राह्म बल, क्षात्र बल की वृद्धि। (८२) उससे शत्रुबल विनाश।

द्वादशोऽध्यायः (पृ० ४६१–५३१)

(१-२) सूर्य के समान तेजस्वी राजा। (२) बालक और सूर्यव्रत

राजा का पोषण । (४) श्येन के दृष्टान्त से राजा और राष्ट्र के अंग-प्रत्यंग । (५) राजा के नाना अधिकार और कर्त्तव्य । मेघ के तुल्य राजा । (६) राजा, गृहपति की नाना समृद्धि । (८) पुनः ऐश्वर्यप्राप्ति । (६,१०) देशान्तरों से ऐश्वर्य-आहरण । (११) ध्रुव पद पर राजा । (१२) पाशमोचक वरुण, श्रेष्ठ अधिकारी राजा । (१३) सूर्यवत् राजा का अभ्युदय । १४) उसके नाना पद और आदर । (१५) पुत्र-वत् पृथिवी माता के प्रति राजा की स्थिति । (१५) शत्रुदमनकारी परंतप राजा । (१७) सर्व कल्याणकारी होने का उपदेश । (१८) विद्वान्, नायक और सूर्य । (१६) उसके तीन प्रकार के तेज । (२०,२१) सूर्य के समान, दाता, पालक, बलवान्, तेजस्वी राजा । (२४) अग्नि के समान राजा । (२५) सूर्य के समान राजा का वर्णन । (२६) सेना-पति और राजा का सम्बन्ध । (२७) शत्रु-उच्छेद के लिये सेनापति-स्थापन । (२८) सूर्य के समान तेजस्वी पुरुष । (२९,३०,३१) उसके गुण और कर्त्तव्य । (३२) शत्रु पर प्रयाण और राजा की रक्षा । (३३,३४) विजयी राजा का आदर । (३५) स्वयंवर के समान योग्य राजा का वरण, उसकी शक्तिवृद्धि, स्त्रियों का गर्भ धारण का कर्त्तव्य । (३६) गर्भोत्पत्ति के समान राजोत्पत्ति । (३७,३८) जीवात्मा और राजा । (३९) बालक के समान माता पृथिवी पर राजा की स्थिति । (५०) समृद्धि प्राप्ति, विजय । (४२) निन्दा और स्तुति में राजा का कर्त्तव्य । ज्ञानी पुरुष का कर्त्तव्य । (४३) सत्यासत्य का निर्णय, न्यायकारिता । (४४) विद्वानों का पुनः शक्ति-उत्तेजन । (४५) चरों का नियोजन । विद्वानों का आदेश । (४७) आश्रितों के कर्त्तव्य (४८) मुख्य विद्वान् । (४८) ज्ञानवान् पुरुष सूर्य के समान सर्वद्रष्टा । (४९) ज्ञानी पुरुष का शिक्षाकार्य । (५०) विद्वानों का प्रेमयुक्त, द्रोहरहित होकर रहना । (५१) विद्वान् पुरुष और अध्यापक का कर्त्तव्य (५२) ऐश्वर्य वृद्धि । (५३) चेतना के समान राजसभा और स्त्री का वर्णन ।

(५४) राजसभा और स्त्री । (५५) सूर्य की रश्मियों से प्रजाओं और स्त्रियों की तुलना और उनके कर्त्तव्य । (५६) वेद वाणियों के समान प्रजाओं का राजा को बढ़ाना, समुद्र से राजा की तुलना, (५७) दम्पती और राजा प्रजा और मित्रों को प्रेम पूर्वक रहने का उपदेश । (५८,५९) पुरोहित, अधिपति का कर्त्तव्य । (६०) दम्पति, मित्रों और युगलों का कर्त्तव्य । (६१) उखा, पृथ्वी, प्रजापति के कर्त्तव्य, पक्षान्तर में सूर्य पृथिवी । (६५) डाकुओं की दमनकारिणी दण्ड शक्ति निर्ऋति । पत्नी और अविद्या । (६६) सूर्य के समान साक्षी राजा परमेश्वर । (६७-७२) योगाभ्यास और कृषि (७३) योगियों का इन्द्रियजय, पशुपालन । (७४) पति पत्नी आदि के तुल्य प्रेम वर्त्ताव । (७५) ओषधियों के १०७ धाम । मर्मों का ज्ञान । (७६) ओषधि; प्रजाएं और वीर सैनिक उनके गुण, उनके व्यवहार, प्राप्ति, वा कर्त्तव्य । (१०२) परमेश्वर और राजा । (१०३) पृथ्वी और स्त्री, कृषि एवं सन्तानोत्पत्ति । (१०४) तेज और वीर्य का धारण । (१०५) अन्न और ज्ञान से आपत्तियों का नाश, (१०६–७) तेजस्वी विद्वान् । अन्यों को तेज और ज्ञान का प्रदान । तेजस्वी की सूर्य से तुलना । (१०८) राजा प्रजा का परस्पर पोषण । (१०९) प्रजा की पशु सम्पदा से वृद्धि । (११०,११७) राजा विद्वान् और गृहपति के कर्त्तव्य ।

त्रयोदशोऽध्यायः (पृ० ५३२–५७३)

(१) उत्तम विद्वानों के अधीन राजा । (१,३) ब्रह्म शक्ति । (४) प्रजापति । (५) शरीर गत प्राणों में वीर्य के समान तेजस्वी राजा । (६,८) सर्पण स्वभाव दुष्टों के दमन में गुप्तचरों का नियोजन । (९) बल से दुष्टों का दमन और मातङ्गबल से प्रयाण । राज्यवृद्धि और शत्रु का तीव्रास्त्रों से नाश । (१०) वीर सैनिकों और तीव्र अश्वारोहियों से नाश का धावा, अशनि नामक अस्त्र । (११) प्रजा के कष्ट का श्रवण, राजा का दूत प्रेषण और प्रजापालन । (१२) प्रजा के व्यथादायी शत्रुओं पर

आक्रमण और उनका निर्मूलनाश। (१३) दिव्यास्त्रों का निर्माण, तथा शत्रुओं की रसद पर रोक। (१४) सूर्य के समान राजा का करग्रहण। (१५) सूर्य के समान सेनापति। (१६) पृथ्वी, राजशक्ति और स्त्री की सुरक्षा। (१७, १८) नौका के दृष्टान्त से प्रजा, पृथ्वी, और स्त्री। (१९) उनके रक्षक पति। (२०, २१) दूर्वा के दृष्टान्त से राजशक्ति, पक्षान्तर में स्त्री। (२२, २३) सूर्यवत् प्रजा का अभिलाषापूरक। (२४) तेजस्वी राजा और प्रजा। (२५) वसन्तवत् राजा। (२६) अषाढ़ा, सेना और पत्नी। (२७–२९) वायु जल, ओषधि, दिन, रात्रि भूमि, सूर्य, वृक्ष, गौ आदि समृद्धि के मधुर होने की प्रार्थना। (३०) राजा का कर्त्तव्य प्रजा को सुखी रखना। (३१) पूर्व के सज्जनों का मार्गानुसरण। (३२, ३३) समृद्धि, की वृद्धि व्यापक शक्तिमान् राजा। (३४) पृथ्वी की सम्पदा-वृद्धि। गार्हस्थ का महत्त्व। (३५) प्रजापति। प्रजापति और पत्नी का एक अन्न, बल, तेज, यश, की वृद्धि करना। सम्राट् और स्वराट्। (३६) राजा और विद्वान् योगी का अश्वों, योग्य पुरुषों और प्राणों पर वश। (३७) अश्वों के समान योग्य पुरुषों (३८) वाणियों, नदियों आत्मा, अग्नि और ज्ञान-धाराओं की घृत धाराओं से तुलना। यज्ञ और अध्यात्म। (३९) उत्तम विद्वान् पुरुष की उत्तम उद्देश्यों के लिये नियुक्ति। (४०) पुरुष की सूर्य और स्वर्ण से तुलना। (४१) सूर्य और मुख्य शिरोमणि। (४२) उसका कर्त्तव्य। (४३) संवत्सर के तुल्य राजसभा, सदस्यों व सभापति के कर्त्तव्य। (४४) परमेश्वरी शक्ति का आदेश। (४५) विद्वान् ज्ञानी की रक्षा, परमेश्वर की पूजा। (४६) सूर्य के तुल्य नेता और परमेश्वर। (४७–५१) पशु, मनुष्य, अश्व गौ, आदि दुधार पशु, भेड़, बकरी की रक्षा और हिंसकों का नाश। (५२) प्रजा के कष्टों का श्रवण, उनका त्राण। (५३) नाना पदों पर योग्य नेता। (५४–५८) दिशा, प्राण और ऋतुभेद से राजा, आत्मा और सूर्य संवत्सर, बलों, विद्वानों और यज्ञांगों के अनुरूप राष्ट्रांग।

चतुर्दशोऽध्यायः (पृष्ठ ५७४–६०५)

(१) उखा, पृथिवी, स्त्री (२) और प्रजा की शिक्षा । (३) सुख, रण विजय एवं प्रजापालनार्थ राजा की स्थापना । पति के कर्त्तव्य । (४) पति पत्नी और राजा और प्रजा का आदान-प्रतिदान । (५) राजशक्ति और गृहपत्नी । (६) ग्रीष्म के समान राजा । (७) राजा और शासकों का प्राणों के दृष्टान्त से वर्णन । गृहस्थ का स्थान । (८–१०) प्राणादि पालन । (९) वयस् और छन्दस् का दृष्टान्तों से स्पष्टीकरण । (११) राजा, सेनापति पुरोहितों के कर्त्तव्य । (१२) राजा, विश्वकर्मा, पति । (१३) राजशक्ति के दिशा भेद से नाना रूप, स्त्री के नाना गुण । (१४) राजा, विश्वकर्मा और पति । (१५, १६). वर्षा, शरद् के तुल्य राजा । (१७) आयु प्राण आदि की रक्षा । (१९) मा, प्रमा आदि शक्तियां । (२०) अग्नि आदि देवता । (२१, २२) नियामक राजशक्ति । (२३) राजा के नाना रूप । (२४, २६) राष्ट्र की नाना समृद्धियां । (२७) हेमन्तवत्, राजा । (२८–३१) नानाप्रकार की ब्रह्मशक्ति, और राष्ट्र व्यवस्थाओं का देह की व्यवस्थानुसार वर्णन ।

पञ्चदशोऽध्यायः (पृष्ठ ६०६–६३९)

(१, २) सेनापति और राजा के कर्त्तव्य । शत्रु-पराजय, प्रजा का शिक्षण । (३) सुव्यवस्थित राष्ट्र और उत्तम राजा (४, ५) ईश्वर और राजा के नाना सामर्थ्य । (६, ७) नाना ऐश्वर्यों और कर्त्तव्यों पर वश करने का उपदेश । (८, ९) 'प्रतिपद्' आदि पदाधिकार । (१०, ११) दिशा और ऋतु-भेद से सूर्यवत् राजा का प्रताप । (२०) शरीर में प्राणवत् राजा । (२१) अग्रणी, नायक, सेनापति । (२२) राजा की उत्पत्ति । (२३) उसका स्वरूप । सूर्य के समान परन्तप राजा । (२५) वन्दनीय परमेश्वर और स्तुत्य राजा । (२६)

दावानल के समान उग्र राजा। (२७) सदा जागरणशील तेजस्वी राजा। (२८) अग्नि के समान शक्तिपुत्र राजा। (२९, ३०, ३१, ३२, ३३, ३४, ३५, ३६) तेजस्वी पुरुष। (३७) शत्रुनाश। (३८) कल्याणकारी होने का उपदेश। (३९, ४०) संग्राम विजय। (४१, ४२) सर्वाश्रय सर्वशरण राजा। (४३) शक्तिमान् सर्वाह्लादक राजा। (४४) यज्ञ रूप, प्रजापति। (४५) रथी के समान राष्ट्र सञ्चालक राजा। (४६) सेनाओं के स्वामी को सुचित्त होने का उपदेश। (४७, ४८) देदीप्यमान अग्नि के समान राजा की तेजस्विता। (४९) सर्वोच्च पदपर ज्ञानी अग्रणी नेता। (५०) उत्तम नेता का अनुसरण (५१) न्यायकर्त्ता का पद और सत्य कर्त्तव्य। (५२) प्रमादरहित नायक। (५३) मर्यादाओं का निर्माण। राजा का उत्तम आश्रय। (५४) राज्य सम्पादन और उत्तम कर्म। (५५) उत्तम मार्ग से प्रजा और गृह का चलाना। (५६) ऐश्वर्य वृद्धि। (५७) शिशिर से राजा की तुलना। (५८) राजा प्रजा और स्त्री पुरुष का उत्तम सम्बन्ध। (५९-६१) राजा के कर्त्तव्य। (६२) वीर सेनापति की अश्व और अग्नि से तुलना। (६३) राजशक्ति। (६४) परमपद, और राजशक्ति और राष्ट्र। (६२) राजा का स्वरूप।

षोडशोऽध्यायः (पृ० ६४०–६७६)

रुद्राध्याय। (१) राजा रुद्र के मन्यु, इषु और बाहुओं को 'नमः, (२, ३, ४) रुद्र की शिव तनु, शान्तिकारिणी राज्यव्यवस्था। (५) भिषक् के समान राजा। (६) तेजस्वी राजा, सेनापति, अधीन रुद्र, उग्र शासक या सैनिक। (७) सेनापति आत्मा और ईश्वर। (८) नीलग्रीव, सहस्राक्ष, सेनापति और वीर योद्धा। (९) धनुष से बाण प्रक्षेप। (१०) वीर का सशस्त्र रूप। (११) शस्त्रों से रक्षा की प्रार्थना। (१२) राजा के कर्त्तव्य। (१३, १४) शक्तिशाली की शक्तियों का आदर (१५, १६) प्रजा की अभय प्रार्थना (१७, ४६)

नाना रुद्रों की नियुक्ति, मानपद, अधिकार, नियन्त्रण । (४७) सेनापति से प्रार्थना । (४८) उसके अधीन सुख से सम्पन्न होकर रहने की प्रार्थना । उसका सर्व दुःखहर रूप । (५०) राजा का प्रजा पर पहरा । (५२) प्रजा की पीड़ा का नाश । (५३) सेनापति के सहस्रों आयुध । (५४) असंख्य रुद्रों के बलों का विस्तार । (५४, ६३) नाना रुद्र अधिकारी । (६४, ६६) उनका अधिकार मान, आदर ॥

सप्तदशोऽध्यायः (पृ० ६७७-७५०)

(१०) वैश्यों का कर्त्तव्य । प्रजा के प्रति राजा का मान्य भाव । मरुद्गण अश्मा । (२) कोटि २ प्रजा, पशु, सम्पदाओं की वृद्धि । (३) राष्ट्र के घटक अंगरूप कामधेनु प्रजाएं । (४, ५) सैवाल के दृष्टान्त से राजा की रक्षाशक्ति । मंडूकी प्रजा, राजा का अवतरण, उसका कर्त्तव्य । (७) राजा के राष्ट्र में सेनाकटक (छावनी) की स्थापना । (८) तेज, प्रभाव से शासन । (९) राष्ट्र का धारण । (१०) प्रजा को ज्ञानवान् करना, शत्रु विजय द्वारा राष्ट्र वृद्धि । (११, १२) राजा के तेज, बल और प्रभाव का आदर । उच्च, मान, आदर प्रदान । (१३) विद्वानों का उपहार और वेतन । (१४) ब्रह्मज्ञानी विद्वानों का पवित्र रूप । (१५) राजा और विद्वान् । (१६) अग्नि के समान तीक्ष्ण राजा । (१७) मुख्य राजा का अधीनों के प्रति कर्त्तव्य । पक्षान्तर में परमेश्वर का वर्णन । (१८) राष्ट्र या साम्राज्य की उत्पत्ति सृष्टि-उत्पत्ति मीमांसा । (१९) विराट्, सम्राट् परमेश्वर का विराट् रूप । (२०) राजाप्रजा की उत्पत्ति । पक्षान्तर में द्यौ, पृथिवी की उत्पत्ति । (२१) विश्वकर्मा राजा का अवरों को पदाधिकार और परमेश्वर । (२२) शत्रु पक्ष को मोह में डालने वाली नीति से राज्य शासन का उपदेश । परमेश्वर की अद्वितीय व्यवस्था । (२३) सर्वपालक, कल्याणकृत् विश्वकर्मा और ईश्वर । (२४) राजा का सेनापति नियोजन । (२५) विद्वान् राजा का राजवर्ग

और प्रजावर्ग दोनों का शासन। पक्षान्तर में परमेश्वर का वर्णन और पक्षान्तर में विद्वान् को स्त्री पुरुष को सम्बन्धित करना। (२६) विश्वकर्मा, सबका पोषक राष्ट्रनिर्माता। सात प्राणों के समान सातों प्रकृतियों का नियामक। (२७) पिता आदि पदपर एवं शासकों का एक राजा, समस्त देवों का एक नामधा परमेश्वर, अध्यात्म में आत्मा। (२८) राजा के उत्तम राज्य में प्रजाओं की उन्नति। (२९) सर्वोत्कृष्ट पद। (३०) सर्ववशकर्त्ता केन्द्रस्थ राजा। (३१) अवर्णनीय राजा। (३२) राजा के चार रूप। (३३) राजा का उग्ररूप सेनापति इन्द्र। (२८–३३) परमेश्वर। (३४) सैनिकों का सेनापति के सहयोग में विजय। (३५) विजयी, वशी राष्ट्रपति। (३६) महारथी। (३७, ३९) शत्रु बल का ज्ञान करके शत्रु पर आक्रमण। (४०) व्यूह-व्यवस्था। (४१, ४२) विजय–घोष। (४३) वीरों को उत्तेजना। (४४, ४५) भयंकर सेना का शत्रु पीड़न। (४६) उग्र अजेय सैनिक। (४७) शत्रु पर भ्रमोत्पादक प्रयोग। (४८) शस्त्रों के गिरते हुए सेवासमितियों के कर्त्तव्य। (४९) वर्म, अन्न ओषधि से रक्षा। (५० ५१) सेनापति का राजा के प्रति और अधीनों के प्रति कर्त्तव्य। (५२, ५३) राजा का कर्त्तव्य। (५४) यज्ञपति, राष्ट्रपति की रक्षा। पक्षान्तर में स्त्रियों का कर्त्तव्य। (५५, ५६) यज्ञ और युद्ध की तुलना। (५७) तुरीय यज्ञ। (५८) राजा और रमेश्वर। (५९) सूर्य और पक्षान्तर में राजा। (६०) राजा गृहपति और योगी। (६१) राजा की स्तुति, ईश्वर की महिमा। (६२) नायक के कर्त्तव्य भरण और पालन। (६३, ६४) राजा के निग्रह और अनुग्रह के कर्त्तव्य। (६५, ६६) सूर्य और नायक। (६७) स्वर्ज्योति। मोक्षप्राप्ति। (६८) उत्तम सम्राज्य, पक्षान्तर में मोक्ष लोक (६९, ७०) राजा और उत्तम अध्यात्म ज्ञानी। (७१) सहस्राक्ष राजा और परमेश्वर। (७२) उत्तम पालक राजा, सुपर्ण और गरुत्मान्। (७३, ७४) राजसभा। (७५) सभा सम्रा-

लन। इश्वरोपासना। (७६, ७७) तेजस्वी सभापति विद्वानों से युक्त विचारसभा। (७८) विचारक सदस्य। गुरु-उपासना, सत्य ज्ञान प्राप्ति। (८०) विद्वानों का वर्णन। (८१) ऋत आदि सात प्रकार की विवेचना। (८२) मुख्य सात सेना-विभाग के नायक। (८४) सात पालक। (८५) प्रजा के साथ मुख्य अंग। (८६) दैवी प्रजा। (८७) सम्राट् पद की प्राप्ति और राष्ट्र। (८८) तेजस्वी राजा की मेघ से तुलना। (८९) राजा, मेघ, परमेश्वर और गृहपति के पक्ष में मधुमान् ऊर्मि। (९०) चतुरंग बल से युक्त सेनापति। चतुर्वेदवित् विद्वान्। (९१) राजा, यज्ञ, आत्मा, शब्द और परमेश्वर पक्षों में महान् देव। (९२) त्रिविध घृत का दोहन। (९३) घृत की धाराओं का अध्यात्म, राज्य और जलधाराओं के पक्षों में योजना। (९६) घृत-धाराओं की उत्तम स्त्रियों से तुलना। (९७) उनकी कन्याओं से तुलना। (९८) यज्ञ और राष्ट्र। राजा और ईश्वर पक्ष में उत्तम राष्ट्र सुख, परमानन्द की प्राप्ति॥



विषय सूची

अष्टादशोऽध्यायः (पृ० १–५१)

यज्ञ से अग्नि आदि दिव्य तत्त्व और उनके ज्ञाता विद्वानों की प्राप्ति, यज्ञ से न्यायाधीश आदि पदाधिकारियों की प्राप्ति। यज्ञ से पृथिवी, अन्तरिक्ष सूर्य, नक्षत्र, काल आदि पदार्थों के ज्ञान और उनके ज्ञाताओं की प्राप्ति (१९) यज्ञ से सूर्य के समान तेजस्वी नाना पदाधिकारियों की प्राप्ति। उसमें अंशु, उपांशु, अदाभ्य, अधिपति, ऐन्द्रवायव आदि का विवरण। (२०) आग्रयण आदि राज्यांगों की प्राप्ति, (२१) यज्ञ से स्रुक् चमसादि यज्ञ साधन के पात्रों की प्राप्ति और उनकी राष्ट्र और देह में व्याख्या (२२) यज्ञ से अग्नि, घर्म, अर्क, प्राण, अश्वमेध आदि की प्राप्ति। उनकी व्याख्या। (२३) यज्ञ से व्रत, ऋतु, तप, सवंत्सर आदि की प्राप्ति। (२४) एक, तीन, पांच आदि एकान्तर क्रम से सेना व्यूह और संख्या वृद्धि का नियम। (२५) यज्ञ से ४। ८। १२। क्रम से ४८ तक के व्यूह। (२३) यज्ञ से भिन्न २ अवस्था और बल वाले पशुओं की प्राप्ति (२६) यज्ञ सेना और नाना पशुओं की प्राप्ति। (२८) संग्राम, उत्तम सन्तान, ज्ञान, कर्म, ऐश्वर्य इनकी उत्तम रीति से शिक्षा और प्राप्ति। तेजस्वी पुरुषों के आदर, मुग्धों अज्ञानियों, को उत्तम ज्ञानोपदेश, प्रजापालक पुरुषों का आदर और उत्तम शिक्षा का आदेश। सूर्य के १२ नामों के अनुसार राजा के १२ नाम। (२९) यज्ञ से, आयु, प्राण, चक्षुः, श्रोत्र, वाणी, मन, आत्मा, ब्रह्मा, स्वः, पृष्ठ, स्तोम, यजु, ऋक्, साम, वृहत्, रथन्तर आदि की प्राप्ति। इनकी व्याख्या। (३१) राष्ट्र में विद्वान् तेजस्वी पुरुषों का होना और उनका राष्ट्र को समृद्ध करना, (३२) ऐश्वर्य का विस्तार और राष्ट्र की रक्षा। (३३) ऐश्वर्य के साथ दानशीलता, पराक्रम और बल की वृद्धि। (३४–३६) ऐश्वर्य वृद्धि के लिये राजा से प्रार्थना। (३७) सम्राज्य से राजा का अभिषेक (३८–३९) अग्नि, सूर्य, चन्द्रमा, वायु, यज्ञ, मन इनकी तुलना से प्रजा के प्रति राजा के कर्त्तव्य। उसके भिन्न २ गुणों से ६ नाम। 'गन्धर्व' नाम का रहस्य। (४४) सब वर्गों का आश्रय राजा, (४५) राजा के समुद्र, मारुत और अवस्यू नामों का रहस्य। पक्षान्तर

में परमेश्वर की तुलना। (४६–४८) राजा और विद्वान् शासक के कर्त्तव्य। राष्ट्र के तेज और स्नेह की वृद्धि। (४९) राजा और पक्षान्तर में परमेश्वर से ज्ञान और जीवन रक्षा की याचना। (५०) राजा के सूर्य के समान कर्त्तव्य। पक्षान्तर में भौतिक पदार्थों के सदुपयोग का आदेश। (५१) उन्नति के लिये अग्रणी नायक की नियुक्ति। पक्षान्तर में परमेश्वरोपासना। और भौतिकाग्नि का उपयोग। (५२) नायक के अधीन सेना के दो पक्ष। सभापति के आगे तत्व निर्णय में पक्ष प्रतिपक्ष, और अध्यात्म में आत्मा, परमात्मा का वर्णन। (५३) राजा की चन्द्र और वाज़ से तुलना। पक्षान्तर में परमेश्वर का स्वरूप। हिरण्यपक्ष श्येन का रहस्य। (५४) राजा के कर्त्तव्य और जिम्मेवारी के पद। (५५) प्रजापालक राजा के मेघ के समान कर्त्तव्य। (५६) सर्वाशापूरक राजा और ऐश्वर्य की आकांक्षा। (५७) अग्रणी नायक का प्रजापालन का कर्त्तव्य और उसका आदर (५८) विद्वानों को उत्तम, पूर्व पुरुषों के उपार्जित पद प्राप्त करने का उपदेश। (५९) विद्वानों के समक्ष राजा को राष्ट्र के कोष का समर्पण। अध्यात्म रहस्य। (६०) सर्वोच्च सम्राट और उसके ऊपर विद्वानों का शासन। पक्षान्तर में ईश्वरोपासना। (६३) अग्रणी नायक को सुख प्राप्ति के मार्ग पर ले चलने के साधनों का उपदेश। (६४) लेन देन, तथा प्रजा के उपकारक बड़े २ कामों पर राजा का नियन्त्रण। (६५) अन्न, राज्य, बल और पराक्रम की वृद्धि, राज्य का विद्वानों के बल पर संचालन। (६६) सम्राट् कैसा हो। (६७) उसके श्रेष्ठ कर्त्तव्य। (६८) अग्रणी नायक के दो मुख्य कर्त्तव्य। (६९–७०) दुष्टों को दण्ड देने का विधान। (७१) शत्रुओं का प्रबल सैन्य से ताड़न। (७२–७३) वैश्वानर अग्नि का वर्णन, राजा सभापति के कर्त्तव्य। (७४) राजा की रक्षा में प्रजा का ऐश्वर्य सुख भोग। प्रजा का राजा के प्रति आदर। (७६) विद्वान् नायकों का राष्ट्र के प्रति कर्त्तव्य। (७५–७७) राजा का प्रजा और उनकी संतानों की रक्षा का कर्त्तव्य।

एकोनविंशोऽध्यायः (पृ० ५२–१२१)

सौत्रामणी । (१) ओषधियों के सदृश समान स्वभाव के शास्य शासक, तथा स्त्री पुरुषों की संगति करके बल की वृद्धि का उपदेश । स्त्री पुरुषों का परिपक्व वीर्य होकर गृहस्थ करने की आज्ञा । सौत्रामणी यज्ञ का रहस्य, सोम और सुराकी व्याख्या । (२) सोम सवन । अभिषेक योग्य पुरुष का लक्षण । (३) राजा का सैन्य बल से सहायवान् होकर शत्रु पर आक्रमण । (४) ज्ञानवान् पुरुष के मनोरथों को पूर्ण करने वाली श्रद्धा, सूर्य दुहिता का रहस्य । (५–६) अभिषिक्त के कर्तव्य । (७) राजा प्रजा के पृथक् अधिकार, सोम सुरा का रहस्य । (८) अभिषिक्त पुरुष का स्वरूप और बल । उसके अभिषेक के प्रयोजन । (९) तेज, वीर्य, बल, ओज मन्यु और सहः, राजा के ये ६ रूप । पक्षान्तर में परमेश्वर से इन छः हों पदार्थों की प्रार्थना । राजा की व्याघ्र, श्येन, सिंह आदि से तुलना और उसकी 'विषूचिका' नाम संस्था का वर्णन । अध्यात्म में अन्तःप्रज्ञा का वर्णन । (११) पुत्र का माता पिता के प्रति कर्त्तव्य । पितृ ऋण से मुक्ति, राजा का पृथ्वी के प्रति कर्त्तव्य । (१२–३१) राजा का बल सम्पादन । राष्ट्र यज्ञ का विस्तार । (१३) यज्ञ से राज्य की तुलना । शष्प, तोक्म, लाजा और मधु आदि यज्ञ गत पदार्थों के नामों का श्लेष पूर्ण अर्थ । सौत्रामणी का स्वाध्याययज्ञ रूप से दिग् दर्शन । (३२) अभिषिक्त पुरुष का इन्द्रपद । उसकी वृद्धि । (३२) 'सरस्वती' और 'अश्विनौ' की वृद्धि का रहस्य । (३४) देह में शुक्र के समान राजा के ऐश्वर्यवान् पद का सार्वजनिक उपभोग । (३५) सैन्य बल की वृद्धि और उसका उपभोग । (३६) स्वधाशी पिता, पितामह, प्रपितामहों का आदर, उन की तृप्ति, और उनका शुद्धि करने का कर्तव्य । पितरों का रहस्य । (३७) पितरों का शुद्धि करने का कर्तव्य । (३८) विद्वान् और राजा का दुःख संकट बाधन का कर्तव्य । (३९–४४) सब विद्वानों का पवित्र करने का

कर्त्तव्य । (४५) यम राज्य में पितरों की स्वधा का रहस्य । (४६) समान और एक चित्त वाले जीवों की लक्ष्मी को अपने में प्राप्त करने की इच्छा (४६) मर्त्यों और देवों के दो मार्ग । छान्दोग्य प्रोक्त तीन मार्गों का विवेचन । (४८) देह में सन्तानोत्पादक दश प्राण युक्त वीर्य की प्रार्थना । अग्नि स्वरूप पति । राष्ट्र पक्ष में दशवीर नायकों से युक्त सैन्य और नायक का वर्णन । (४९) अवर, पर और मध्यम पितरों का वर्णन । (५०) आङ्गिरस, नवग्व, अथर्व, और सोम्य, पितरों अर्थात् पालकों का वर्णन, उनका रहस्य । (५१) वसिष्ठ पितरों का वर्णन और उनका रहस्य । (५२–५४) उनके मुख्य नायक सोम, राजा । (५५–५६) बर्हिषद् पितरों और सुविदत्र पितरों का वर्णन और उनका रहस्य । पितृ जनों को आदर से बुलाना और उनसे रक्षा की प्रार्थना । (५८) अग्निष्वात्त पितरों का वर्णन। उनके देवयान मार्ग और उनकी स्वधा से तृप्ति का रहस्य । (५९) उनके सर्ववीर रयि का रहस्य । (६०) उनकी असुनीति तनु की कल्पना का रहस्य । अग्निष्वात्त, ऋतुमान् सोमपायी विप्रों का वर्णन । (६२) उक्त पालक जनों का सभ्यता पूर्वक आसनों पर विराजना । (६३) पालक जनों का ऐश्वर्य दान । उसका विविध रहस्य । (६५) उसका पितृ जनों से सम्बन्ध । (६६) उसका पितृ जनों का उत्तम पुष्टि कारक अन्नों का दान । (६७) विद्वानों और ऐश्वर्यवान् का पालक पुरुषों के प्रति कर्त्तव्य । (६८) पूर्व और पर, तथा पृथिवी लोक और प्रजाओं पर अधिष्ठित पालक जनों का वर्णन । (६९) ज्ञानोपदेष्टा, ज्ञानवेत्ता पितरों का वर्णन, (७०) कामनावान् पितरों का वर्णन ।(७०) सूर्य मेघ के दृष्टान्त से राजा का शत्रु के प्रति कर्त्तव्य । (७१) अपां फेन से नमुचि के शिर के काटने का रहस्य । (७२) अभिषिक्त राजा का कोप, बल द्वारा विपद्-विजय सम्पत् प्राप्ति । अध्यात्मिक मृत्युंजय और मधु अमृत पान का रहस्य । (७३) हंस के दृष्टान्त से अध्यात्म में ज्ञानी के परमानन्द रस का पान और राजा के ऐश्वर्य के उपभोग का वर्णन । (७४) हंस के दृष्टान्त

से शुचिषत् आत्मा और धर्मात्मा राजा का प्राणों और प्रजाओं से रस और ऐश्वर्य प्राप्ति का वर्णन। (७५) अन्न से पौष्टिक रस के समान राजा का सार भूत ऐश्वर्य और अध्यात्म में आनन्द रस की प्राप्ति। (७६) सूत्र, वीर्य तथा गर्भ जरायु के दृष्टान्त से दान और उत्सर्ग के महत्व का वर्णन। (७७) सत्य के बल पर प्रजापालक की सत्य में श्रद्धा और असत्य में अश्रद्धा का उपदेश। (७८) वेद द्वारा सद् असत् के विवेक का उपदेश। (७९) अत्तार के दृष्टान्त से शुद्ध उपाय से अर्थोपार्जन का उपदेश। (८०) सीसे से शत्रु नाश करने और सूत्र से कपड़ा बुनने के दृष्टान्त से निर्बल राष्ट्र की वृद्धि का उपदेश। (८१) दो अश्वी और सरस्वती तीनों का राष्ट्र रक्षा और पोषण के साधनों का उत्पादन। (८२) उक्त तीनों का अन्नों से शरीर को वैद्यों के समान वेतनबद्ध भृत्यों द्वारा सुदृढ़ करना। (८३) बुद्धिमती स्त्री के समान राजसभा का राष्ट्र में ऐश्वर्य और शोभा बढ़ाते रहना। (८४) वीर्य द्वारा सन्ततिजनन के समान राजा की उत्पत्ति। शरीर से मल के समान दुष्ट पुरुषों का राष्ट्र से निर्वासन। (८५) अन्न से बल प्राप्त करने के समान सुरक्षक राजा की बल वृद्धि, उदर के भीतरी अंगों से शासकों की तुलना। (८६–८७) प्लीहा आदि भीतरी अंगों की तुलना। (८८) मुख से राज्य व्यवस्था की तुलना। (८९) राष्ट्र की चक्षु से तुलना। (९०) समृद्ध राष्ट्र की नासिका से तुलना। (९१) राजा और आत्मा की बैल से तथा राष्ट्र की मुख से तुलना। (९२) पूर्ण राष्ट्र की शरीर से तुलना। (९३) योग द्वारा शरीर शोधन और चिकित्सा के समान ही राष्ट्र का शोधन और चिकित्सा। अंगों की सप्ताङ्गों से तुलना। पक्षान्तर में गृहस्थ का वर्णन। (९४) स्त्री के गर्भ में बालक के धारण के समान प्रजा के बीच राजा का धारण। (९५) दूध और मधु के समान अभिषेक द्वारा राजा का दोहन।

विंशोऽध्यायः (१२२–१७२)

(१) राजा, सभापति का स्वरूप और उसका प्रजा के प्रति कर्तव्य।

(२) सर्व श्रेष्ठ पुरुष का सिंहासन पर विराजना और उसको प्रजा पालन के कर्तव्योपदेश। (३) राजा का अभिषेक। और उसके ९ प्रयोजन। (४) सम्राट् का नामकरण और उपाधिवितरण। सम्राट का तेजस्वी रूप सम्राट् और विराट् का आंख कान का सा सम्बन्ध। (६-८) पदाधिकारों और अध्यात्म शक्तियों की तुलना। (१०) अंगों में आत्मा के समान राष्ट्र के अंगों में राजा की प्रतिष्ठा। (११) तेतींस विद्वान् देवों की प्रतिष्ठा। (१२) उनके परस्पर सहयोग से वृद्धि। (१३) राजा के शरीर के अंगों की राजा की शक्तियों या अधिकारों से तुलना। (१४-१८) विद्वानों का प्रजाजनों को असत्कर्मों और बन्धनों से छुड़ाना। (१९) आप्त पुरुषों का ओषधिवत् रक्षक और शत्रुनाश होने की प्रार्थना। (२०) आप्त पुरुषों का पापों से छुड़ाने का कर्त्तव्य। (२१) राजा का सर्वोत्तम पद। (२२) अभिषिक्त राजा का उपसर्पण और ऐश्वर्य धारण। (२३) सम्राट् की वैश्वानर ज्योति सूर्य के समान स्थिति। (२४) प्रजापति के अधीन व्रतोपायन और दीक्षा ग्रहण। गुरु शिष्य सम्बन्ध का विवरण। (२५-२६) ब्रह्म क्षत्र युक्त पुण्य लोक का वर्णन। (२७) सम्राट् को आशीर्वाद। (२८) दान शील उदार राजा का वर्णन। (२९) समृद्ध राजा का आश्रय करना। (३०) विद्वानों का राजा को उपदेश करने का धर्म। (३१) राजा का अभ्युक्षण, दीक्षा। (३२-३३) राजा का सरस्वती (राजसभा) इन्द्र, और सुत्रामा पद पर स्थापन भूताधिपति का पद। (३४) राष्ट्र शरीर के प्रधान शक्तियों के रक्षण कर्त्ता के पद पर नियुक्ति। (३६) शत्रु विजय का आदेश। (३७) नराशंस, तनूनपात् पद, उसके कर्त्तव्य। (३८) गोत्रभित्, वज्रबाहु राजा का स्वरूप। (३९) सूर्य के समान हरिवान् इन्द्र राजा का स्वरूप। (४०) पति को स्त्रियों के समान प्रजाओं और सेनाओं का अपना नायक वरण। (४१) उषा, नक्त नाम दो संस्थाओं का नायकस्वीकरण। (४२) अग्नि और वायु नाम दो मुख्याधिकारियों का राजा को स्वीकार। (४३) सरस्वती, इडा, भारती

तीनों देवियों का राजा को वरण। (४४) तेजस्वी पुरुष को सैनापत्य पद। (४५) वट आदि के समान वनस्पति पद। (४६) इन्द्र, सेनापति पद के योग्य पुरुष का लक्षण। (४७) इन्द्र सुत्रमा के कर्तव्य। (५५) अग्नि के समान तेजस्वी पद पर अभिषिक्त नायक के लक्षण। (५६–६०) सरस्वती और अश्वियों के कर्तव्य। (६१–७७) उषा, नक्त, अश्वि, तीन देवियें, सविता, वरुण, इन सबका इन्द्र पद को पुष्ट करना। (७८) अग्रणी नायक का स्वरूप। (७९) उसके कर्तव्य। (८०) राजा की बल वीर्य पुष्टि। (८१) अश्वियों के कर्तव्य। (८२) मेघ के समान राजा के कर्तव्य। (८३) अधिकारियों के कर्तव्य। (८४–८६) विद्वत्सभा के कर्तव्य। (८७–९०) इन्द्र सुत्रामा का आदर।

एकविंशोऽध्यायः (१७३–२२७)

(१) प्रजा की प्रार्थना सुनने का राजा का कर्तव्य, पक्षान्तर में परमेश्वर का स्मरण। (२) प्रजा की शरण याचना, राजा का अभय दान। (३) प्रजा के परस्पर कलहों का दूर करना राजा का कर्तव्य। (४) उत्तम नायक को प्राप्त करने की प्रार्थना। (५–७) राजसभा और राज्य व्यवस्था की नौका के साथ तुलना, कर्तव्य दृष्टि से उसका उत्तम स्वरूप। (८–९) मित्र और वरुण पदों के कर्तव्य। (१०–११) अश्वों, अश्वारोहियों और ज्ञानवान् पुरुषों के लक्षण। (१२–२२) आप्री देवों का वर्णन। अग्नि, तनूनपात्, सोम, बर्हिः, द्वार उषासानक्ता, दैव्य होता, इडा आदि तीन देवियें, त्वष्टा, वनस्पति, वरुण। इन पदाधिकारों के के कर्तव्य, बल और आवश्यक सदाचार। तपःसामर्थ्य का वर्णन। (२३–२८) संवत्सर के ६ ऋतु भेद से यज्ञ प्रजापति और प्रजापालक राजा के ६ स्वरूपों का वर्णन। (२९–४१) अधिकार प्रदान। और नाना दृष्टान्तों से उनके और उनके सहायकों के कर्तव्यों का वर्णन। अग्नि, तनूनपात्, नराशंस, बर्हि, द्वार, सरस्वती, उषा, नक्त, दैव्य होता

तीन देवी, त्वष्टा, वनस्पति, अश्विद्वय, इन पदाधिकारियों को अधिकार प्रदान। (४२–४७) अधिकार दान, उनके सहायकों के कर्तव्य। महीधर आदि के किये बकरे की बलिपरक अर्थ का सप्रमाण खण्डन। सरस्वती नाम विद्वत्सभा को अधिकार, उसके सहायकों के कर्तव्य। छाग, मेष, ऋषभ और उनके हवि, मद, तथा उनके पार्श्व, कटि, प्रजनन, आदि अंगों के अवदान करने का रहस्य। (४७–५८) स्विष्टकृत् अग्नि का विवरण। (४८–५८) उक्त अधिकारियों के स्थान, मान, पद और उनका ऐश्वर्य वृद्धि का कर्तव्य। (५९) होता नाम अग्रणी नायक का वरण। (६०) वनस्पति अधिकारी का वरण। (६१) वृत विद्वानों के कर्तव्य।

द्वाविंशोऽध्यायः (पृ० २२८२४५)

(१) राजा का राष्ट्र में स्थान और उसका कर्तव्य। (२) परमेश्वर की व्यापक शक्ति के समान राजा की राज्य-व्यवस्था का वर्णन। (३) परमेश्वर के गुणों का वर्णन, पक्षान्तर में राजा के गुणों का वर्णन। (४) राजा को और नायक विद्वानों को अधिकार प्रदान, (५) अधिकार पदों के लिये प्रोक्षण अभिषेक और आदर योग्य पुरुषों का वर्णन। (६) आवरणीय नायक पुरुष का नाना अवस्थाओं में भी उसका ४९ दशाओं में आदर सत्कार और रक्षा करने का उपदेश। (९) गायत्री। (१०–१२) हिरण्यपाणि सविता। आज्ञापक का स्वरूप। (१५–१६) अग्नि अर्थात् विद्वान् दूत का वर्णन, अध्यात्म में ज्ञानी उपासक का वर्णन। (१८) तेजस्वी पुरुष की उत्पत्ति, और उसका पृथ्वी के पालन का कर्तव्य। (१९) अश्व के दृष्टान्त से नायक भोक्ता आत्मा और परमेश्वर के १३ नाम, उनसे सूचित गुण, कर्तव्य और उन गुणों के कारण उसका अभिषेक। (२०) प्रभु के 'क' आदि नाना गुण, कर्मसूचक नाम और उनका आदर। (२१) नायक सखा। (२२) आदर्श राष्ट्र की समृद्धि की कामना। (२३) प्राण आदि शारीरिक शक्तियों की साधना। (२४) प्राची आदि ६

दिशाओं और १२ उपदिशाओं से राष्ट्र की रक्षा। (२५) नाना प्रकार के जलों के दृष्टान्त से, गुण भेद से नाना गुणों वाली सेनाओं और प्रजाओं का वर्णन। (२६) वात, धूम, अभ्र आदि नाना मेघ की दशाओं की तुलना के साथ २ नायक के नाना कर्मों का वर्णन। (२७) अग्नि आदि पदार्थों की साधना। (२८-३१) नक्षत्र आदि के सुखकारी होने की भावना। (३२-३३) यज्ञ से अन्न, ज्ञान, बल आदि की उत्पत्ति।

त्रयोविंशोऽध्यायः (पृ० २५६-३०१)

(१) हिरण्यगर्भ परमेश्वर का वर्णन, पक्षान्तर में राजा का वर्णन। (२) व्यवस्था में बद्ध राजा की सूर्य और वायु और अन्तरिक्ष से तुलना। राजा का प्रजापति पद। (३) ईश्वर और राजा के महान् ऐश्वर्य का वर्णन। (४) व्यवस्थाबद्ध राजा का चन्द्र, अग्नि, नक्षत्रों से तुलित महान् सामर्थ्यों का वर्णन। पक्षान्तर में परमेश्वर का वर्णन। (५) दोषरहित तेजस्वी राजा की नियुक्ति, पक्षान्तर में परमेश्वर की योग द्वारा उपासना। पक्षान्तर में सूर्य का वर्णन। (६) रथ में जुते अश्वों के समान दो नायकों की नियुक्ति। (७) राजा को सन्मार्ग पर लेजाने के लिये उसके स्तोतृ नायक विद्वान् की नियुक्ति। (८) गायत्र, त्रैष्टुभ, और जागत तीन छन्दों से वसु, रुद्र और आदित्यों द्वारा स्तवन। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य इन तीन द्वारा राजा की कीर्त्ति। तेजस्वी, शक्तिमान् राजा को राष्ट्रैश्वर्य भोग की आज्ञा। (९-१२) ब्रह्मोद्य। ब्रह्म और प्रभु राजा की शक्ति विषयक प्रश्नोत्तर। सूर्य, अग्नि, भूमि, द्यौः, अश्व, अवि और रात्रि विषयक प्रश्नोत्तर। (१३) राजा की शक्ति को पुष्ट करने के लिये सेनापति आदि पदाधिकारियों का उत्तम उद्योग। (१४) रथ अश्व के दृष्टान्त से ब्रह्मा नाम विद्वान् के कर्तव्य और स्थिति का वर्णन। पक्षान्तर में अध्यात्म विवेचन। (१५-१६) ऐश्वर्यवान् स्वामी और अध्यात्म में आत्मा का वर्णन। (१७) अग्नि, वायु, सूर्य के दृष्टान्त से विजयाभिलाषी राजा के कर्तव्यों का उपदेश।

अग्नि, वायु, सूर्य तीनों के पशु कहाने का रहस्य। (१८) प्राण आदि शक्तियों का उपयोग, राज्यलक्ष्मी और वसुधा का वीरभोग्य होना। काम्पीलवासिनी सुभद्रिका और सोने वाले अश्वक का रहस्य। पक्षान्तर में पतिंवरा कन्या तथा अध्यात्म में स्पष्ट विवरण (१९) गणपति, परमेश्वर, विद्वान्, राजा और गृहपति का वर्णन, गर्भध परमेश्वर और गर्भध प्रकृति का रहस्य। (२०) राजा प्रजा की चतुर्वर्ग-साधना। गृहस्थ का चतुष्पाद् स्वरूप। महीधर के अर्थों की असंगति। दुष्टों के प्रति राजा का व्यवहार। गृहस्थ पक्ष में चरकादि वैद्यक शास्त्रोक्त प्रजोत्पत्ति विद्या का मूल निदर्शन। (२२) समृद्ध, शक्तिमती प्रजा के ऊपर बलवान् राजा की स्थापना। दम्पति पक्ष में दोनों स्त्री पुरुषों के परस्पर कर्तव्य। (२३) शक्तिशाली राजा का स्वरूप और उसका मुख्य व्रत वाणी पर वश करना। दम्पति पक्ष में शक्तिमान् पुरुष का स्त्री के हृदय का आकर्षक और एक स्त्री व्रत होने का उपदेश। (२४) माता पिता का प्रधान पद और स्नेह से रक्षार्थ ही राष्ट्र की समृद्धि के आधार पर राजा का सैन्य बल का होता है। मन्त्रोक्त मुष्टि, गभ, वृक्ष आदि शब्दों का रहस्य विवेक। गृहस्थ पक्ष में माता पिता का उच्च पद, और ऐश्वर्य या स्त्री के आधार पर पारिवारिक स्नेह की व्यवस्था। (२५) राष्ट्र प्रजाजन की माता राजसभा और पिता राजा दोनों का विस्तृत राज्य पर सुखी रहना और धुरन्धर वेदवित् ब्रह्मा की जिम्मेवारी और वाणी पर वश। (२६–२७) पर्वत पर बोझा ढोने वाले के समान राष्ट्र भार के उठानेवाले की जिम्मेवारी। और वायु वेग से छाज द्वारा अन्न शोधन करने वाले के समान राष्ट्र का कण्टकशोधन। दम्पति पक्ष में गृहस्थ पुरुष के उत्तम कर्तव्य। (२८) गाय के खुरों की उपमा से ब्राह्म और क्षात्र बलों का पृथ्वी पालन में उपयोग। इसी प्रकार गृहपति के कर्तव्य। (२९) न्यायशील पुरुषों को सभा में सत्य निर्णय करने का उपदेश। मन्त्रोक्त 'नारी' पद का रहस्य। (३०) हरिणि और खेत तथा स्वामी और दासी के दृष्टान्त से प्रबल राजा की धन

लालसा से प्रजा की समृद्धि के नाश हो जाने की चेतावनी। (३१) हरिण और यव तथा भृत्य और रानी के भोग के दृष्टान्त से दुष्ट राजा के द्वारा उत्तम प्रजा के नाश हो जाने की चेतावनी। (३२) विजयशील राजा की स्थापना। (३३) गायत्री आदि छन्दों के नामों से नाना प्रकार की उत्तम वाणियों से राजा के हृदय की शान्ति। (३४-३५) द्विपदा आदि और महानाम्नी आदि वेदवाणियों से स्वामी का शान्तिकरण। इसी प्रकार गायत्री, द्विपदा महानाम्नी आदि भिन्न २ प्रजाओं का वर्णन। (३७) सेनाओं के शस्त्रों द्वारा विजयी पुरुषों की पालक शक्तियों का शान्ति प्रयोग। इसी प्रकार उत्तम स्त्रियों द्वारा उत्तम पतियों की हृदय सुख शान्ति। (३७) उत्तम स्त्रियों के गुण, एवं उत्तम प्रजाओं के अपने स्वामी को प्रसन्न रखने और शान्त रखने का कर्तव्य। (६८) राजा का प्रजा के भोजनादि सुख का प्रबन्ध करना। (३९) प्रजाओं में शान्ति विधायक शासक का लक्षण। (४०) विद्वान् सदस्यों का शान्ति विधान का कर्तव्य। (४१) सवंत्सर के अंग भूत दिन रात्रि के समान नाना राज्याङ्गों और उनके अध्यक्षों के कर्तव्य। (४२) राष्ट्र के पालक पुरुषों का कार्य, राष्ट्र का शासन और उनका शान्तिकारिणी व्यवस्थाएं बनाना। (४३) सूर्य, वायु, आकाश और नक्षत्रों के समान तेजस्वी, बलवान्, और उदार और दृढ़ स्थिर लोगों से राष्ट्र की न्यूनताएं दूर करना। (४४) सर्वाङ्ग शान्ति। (४५-४८) पुनः ब्रह्मोद्य। सूर्य चन्द्र अग्नि, भूमि, ब्रह्म, द्यौ, इन्द्र, वाणी के सम्बन्ध में प्रश्नोत्तर। (४९-५०) व्यापक परमेश्वर के तीन चरणों में विश्व की स्थिति, (५१-५२) पुरुष अर्थात् जीव के आश्रय तत्व। (५३-५४) अ० २३। ११। १२। के समान प्रश्न। पिशंगिला, कुरु पिशंगिला, शश, और अहि के सम्बन्ध में प्रश्नोत्तर और उनका रहस्य विवेचन। (५७-५८) जगत् रूप यज्ञ के आश्रय, तथा कारण पदार्थ, संचालक शक्तियों के सम्बन्ध में प्रश्न-उत्तर। (५९-६०) सर्वज्ञ विषयक प्रश्न। (६१-६२) पृथिवी के पर अन्त, भुवन की

नाभि, अश्व के रेतस् और वाक् के परम व्योम सम्बन्धी प्रश्न और उनके उत्तर और रहस्य का स्पष्टी करण। (६३) प्रजापति की उत्पत्ति, पक्षान्तर में राजा और परमेश्वर के प्रजापति नाम होने का कारण। (६४) होता द्वारा प्रजा पालक राजा के अधीन ऐश्वर्य युक्त राज्य का समर्पण। (६५) प्रजापति का अद्वितीय सामर्थ्य और उससे ऐश्वर्य की प्रार्थना।

चतुर्विंशोऽध्यायः (पृ० ३०२३३१)

(१-२) राजा के अधीन राष्ट्र के १६ पर्यङ्गों का वर्णन। (३-१९) अन्यान्य प्रत्यंगों तथा अधीन रहने वाले नाना विभागों के भृत्यों और उनके विशेष पोशाकों और चिन्हों का विवरण। (२४) ऋतु के अनुसार पक्षियों का वर्णन और उनसे राष्ट्र के हिताहित ज्ञान करने का उपदेश। (२१) समुद्र, मेघ, जल, आदि से सम्बद्ध जीवों के ज्ञान का उपदेश। (२१—३९) भिन्न २ गुणों और विशेष हुनरों के लिये भिन्न २ प्रकार के नाना पक्षियों और जानवरों के चरित्रों का अध्ययन और संग्रह।

पञ्चविंशोऽध्यायः (३३२-३७२)

(१) नाना प्रकार के शिल्पों तथा गुणों और रहस्यमय पदार्थों के ज्ञान के लिये शरीर गत अंगों का दृष्टान्त रूप से उल्लेख। (२-३) वाह्य जगत् की शक्तियों की देहगत शक्तियों से तुलना। (४-५) शरीर गत पसुलियों से राष्ट्र के अधिकारियों की तुलना। (६) देह के पीठ के मोहरों से राज्याधिकारियों की तुलना और उनके कर्त्तव्य विवेचन। उदर में स्थित अंगों से राष्ट्र के अन्य पदार्थों की तुलना। अथवा उनकी शक्तियों से उनके उपयोगों की आलोचना। (८) शरीर के अंगों से अन्य पदार्थों की तुलना और उनके गुणों का विश्लेषण। (९) शरीर की और जगत् की प्रबल शक्तियों की तुलना। अपान और राजा की तुलना। (१०-१३) प्रजापति का वर्णन। परमेश्वर की उपासना (१४-१५) विद्वानों से

प्रार्थना । (१६) उनका आदर सत्कार । (१७) सुखकारी ओषधि, माता पिता, भूमि, सूर्य, विद्वान् ऐश्वर्यवान् पुरुष और यज्ञ साधनों से सबसे उत्तम सुख की कामना । (१८–१९) ईश्वरोपासना । वायुओं के समान मातृ भूमि के भक्त वीरों का वर्णन । उनके लक्षण और कर्तव्य । (२१) उत्तम वचन का सुनना, उत्तम दर्शन, स्थिर अंगों से सुख पूर्वक जीवन भोग की प्रार्थना । (२२) शत वर्ष के पूर्ण जीवन की कामना । (२३) अदिति के ९ प्रकार । (२४) ऐश्वर्यवान् बलवान् विद्वान् पुरुष के सामर्थ्यों का वर्णन । (२५) राजा की दी वृत्ति को मुख्य रूप से मानना । अधीन वृत्तिग्राहियों के कर्तव्य । पक्षान्तर में परमेश्वर और विद्वान दोनों की स्तुति । (२६–२७) प्रधान वीर पुरुषों के कर्तव्य । पूषा के विश्वदेव्य भाग, छाग और उसका अश्व के साथ आगे चलने का रहस्य । (२८) यज्ञ के होतादि कार्य कर्त्ताओं के समान राष्ट्र के प्रधान कार्य कर्त्ताओं का कर्तव्य । (२९) राज्य के राज सहायकों के सहोद्योग की आंकाक्षा । (३०) उत्तम कार्यकर्त्ताओं की कार्य में नियुक्ति । (३१) उनकी प्रधान शक्ति और अधिकार योग्य वेतन पर नियुक्ति । अश्व की रशना, और रज्जु का रहस्य । (३२) राष्ट्र के सब कार्यों को विद्वानों के हाथ में रखने का उपदेश । अश्व के मांस को मक्षिका के खाने, उसके स्वरु स्वधिति में लगने, शमिता के नखों और हाथों में लगने का रहस्य । (३३) दुष्टों का दमन । (३४) राष्ट्र की उपज का सदुपयोग और संग्रह । पक्षान्तर में ब्रह्मचर्य की रक्षा का उपदेश । (३५) वैश्यों, क्षत्रियों और विद्वान् परिव्राजकों के सहोद्योग की आकांक्षा । पक्षान्तार में ब्रह्मचारियों के व्रत की विवेचना । उनका भिक्षा व्रत । परिपक्व वाजी का रहस्य । (३६) उत्तम राष्ट्र के शोभा जनक भूषण, अध्यात्म में देह में स्थित आत्मा के विशेष गुण और शक्तियों का वर्णन । (३७) संकटों से रक्षा की चेतावनी और उनके उद्योग । (३८–३९) राजा के सब खान पान विहार आदि पर विद्वानों का निरीक्षण (४०) वेद ज्ञान द्वारा

राष्ट्र की बाधाओं को दूर करना। (४१) राष्ट्र के ३४ अंगों को दोष रहित करना। (४२) राष्ट्र के कार्यों का विभाग और उनपर योग्य विद्वान् अध्यक्ष की नियुक्ति। (४३) सेना आदि द्वारा राष्ट्र प्रजा को व्यर्थ न सताने का उपदेश। उत्तम मार्गों, और उत्तम व्यवस्थाओं से राष्ट्र, राज्य और राजा की दीर्घायु। उत्तम पदों पर रथ में अश्व के समान उत्तम पुरुषों की नियुक्ति। (४५) उत्तम क्षात्र बल की प्राप्ति। (४६) राष्ट्र को दृढ़ बनाने का उद्योग। (४७–४८) राजा को प्रजाप्रिय और तेजस्वी होने का उपदेश।

षड्विंशोऽध्यायः (३७३–३८६)

(१) अग्नि पृथिवी, वायु अन्तरिक्ष, आदित्य, द्यौ, आपः, वरुण, इनके समान परस्पर राजा प्रजा का प्रेम से उपकारी होकर रहना। सात संसत्, और आठवीं भूतसाधनी संस्था का वर्णन। उत्तम ज्ञान प्राप्ति का उपदेश। (२) सबके लिये कल्याणी वाणी का उपदेश। वृत्ति दाता और विद्वानों का प्रिय और पूर्णकाम हो। (३) बृहस्पति पद पर योग्य पुरुष का रूप। पक्षान्तर में परमेश्वर का वरण। (४–५) सभापति पद पर वाग्मी विद्वान् का वरण, उसके साथ विद्वानों का साहाय्य। (६–७–८) वैश्वानर पद पर योग्य पुरुष का वरण। उसका लक्षण। (९) अग्नि पद पर योग्य पुरुष की स्थापना। (१०) महेन्द्र पद पर योग्य विद्वान् की स्थापना। (११–२६) उत्तम विद्वानों, नायकों और शासकों से भिन्न २ कार्यों की कामना।

सप्तविंशोऽध्यायः (पृ० ३८७–४१०)

(१–७) अग्नि नाम विद्वान् नायक के कर्तव्य और लक्षण, (८–९) बृहस्पति पद पर स्थित विद्वान् का वर्णन (१०–२२) अग्नि और वाग्मी नाम विद्वानों का वर्णन। (२३–२४) वायु नाम सेनापति का वर्णन। (२५–२६) 'क' प्रजापति का वर्णन। (२७–३३) नियुत्वान् वायु,

सेनापतिं का वर्णन। (३५-४२) इन्द्र नायक का वर्णन। (४३-४४) अग्नि रूप से नायक राजा का वर्णन उससे रक्षा की प्रार्थना। (४५) संवत्सर के पांच रूप और तदनुसार प्रजा पालन के ५ रूप।

अष्टाविंशोऽध्यायः (४११-४४४)

(१-३४) होता द्वारा भिन्न २ अधिकारियों की नियुक्ति और उनके विशेष आवश्यक लक्षण, और अधिकार और शक्तियों का वर्णन। (३५-४५) उनका इन्द्र सेना नायक और उसके ऐश्वर्य को बढ़ाने का कर्तव्य। (४६) अग्नि होता का वरण।

एकोनत्रिंशोऽध्यायः (४४५-४८५)

(१) घृत से तीव्र अग्नि या जाठराग्नि के दृष्टान्त से विवेकी विद्वान् का वर्णन। (२) संग्राम आदि के अवसरों पर संघ बना कर काम करने का उपदेश। (३) स्तुति योग्य, वन्दन करने योग्य, प्रसन्नमुख योग्य पुरुष की उत्तम पद पर नियुक्ति। (४) राष्ट्र प्रजा का विस्तृत करना और उसको व्यवस्थित रखना। पक्षान्तरमें विद्युत् का वर्णन। (५) गृह के द्वारों से देवियों की तुलना। दोनों पक्षों में श्लिष्ट विशेषण। पक्षान्तर में शास्त्र विजयीसेनाओं का वर्णन। (६) देह में प्राण और उदान के समान मित्र और वरुण का वर्णन। पक्षान्तर में दिन रात्रि और स्त्री पुरुषों के कर्तव्यों का वर्णन। (७) उपदेशक और अध्यापक और पक्षान्तर में स्त्री पुरुषों के परस्पर कर्तव्यों का वर्णन। (८) इडा, भारती, सरस्वती आदि संस्थाओं का कर्तव्य। (९) गृहस्थ में, राष्ट्र में और उपासना में क्रम से योग्य पुरुष, शिल्पी, और उपासकों की नियुक्ति। (१०) तेजस्वी सूर्य और आश्रय वृक्ष के दृष्टान्त से, नायक, मुख्य पुरुष का भृत्यों के प्रति कर्तव्य। (११) अग्रणी का कर्तव्य। (१२) उदय होते सूर्य, वाज, और वेगवान् हरिण के समान सेनानायक, का स्तुत्य रूप। (१३) राष्ट्र

के अनुयोक्ता त्रिवेदज्ञ पुरुष का होना, उसका आज्ञापक होना। पक्षान्तर में अध्यात्म देह व्यवस्था का वर्णन। (१४) नायक और आत्मा के यम, आदित्य, और अर्वा तीन नाम। उसके तीन बन्धन। (१५) उसके तीन स्थानों पर तीन २ बन्धन। (१६) उसका सर्वोत्कृष्ट रूप। (१७) व्यवस्थाबद्ध नायक की अश्व से तुलना। उत्तम मार्गों से मुख्य व्यक्ति को जाने का आदेश। अध्यात्म में उन्नति मार्ग का अनुसरण। (१८) विजिगीषु का उत्तम रूप, ओषधियों के ग्रास का रहस्य। अध्यात्म में ओषधिमय जीवनप्रद भोजन का उपदेश। (१९) नायक के प्रति सबको सख्य भाव से रहने की आज्ञा। (२०) मुख्य अध्यक्ष का महान् सामर्थ्य, उसके हिरण्यश्रृंग और अयःपाद होने का रहस्य। (२१) वीरबाहु चुस्त शूर वीरों को दल बद्ध दस्ते बना कर युद्ध करने का आदेश। अध्यात्म में योगियों का वर्णन। (२२) बलवान् शरीर और मन होने और जंगलों में सेना दलों की स्थापना। (२३) शत्रु उच्छेदक नायक का वर्णन। 'अज' का रहस्य। उत्तम पद पर स्थित पुरुष को माता पिता के आदर का उपदेश। अध्यात्म में मोक्ष प्राप्त पुरुष को प्रकृति परमेश्वर का दर्शन। (२५) नायक को विद्वानों को संगठन करने का आदेश। दूत का कर्तव्य। (२६) तनूनपात् नामक विद्वान् के कर्तव्य। ज्ञान और उपास्य और ग्राह्य ज्ञानों को उत्तम भाषा में प्रकट करने का उपदेश। (२७) उत्तम प्रशंसनीय नायक, का महान् सामर्थ्य कि उसके आश्रय में अन्य विद्वान् रहें। (२८) दानशील संगठन के केन्द्रस्थ व्यक्ति के कर्तव्य। (२९) प्रथम संस्थापक का कर्तव्य। आसन के समान विस्तृत होकर अन्यों का आश्रय होना। (३०) द्वारों के दृष्टान्त से गृह देवियों के कर्तव्यों का वर्णन। पक्षान्तर में सेनाओं के कर्तव्य। 'अयन' शब्द का समुचित अर्थ। (३१) दिन रात्रि के समान स्त्री पुरुषों के कर्तव्य। (३२) मुख्य विद्वानों या स्त्री पुरुषों का कर्तव्य। ज्ञानोपदेश। (३३) भारती आदि तीन संस्थाओं के कर्तव्य। (३४) आकाश या सूर्य और पृथिवी के समान राजप्रजा

वर्गों को नाना ऐश्वर्यों से सुशोभित करने का कर्तव्य। (३५) ऋत्वनुसार भोजनों की व्यवस्था। (३६) यज्ञाग्नि की ज्वाला से हव्य के विस्तार के समान राजा के सत्य, न्यायवाणी पर समस्त प्रजाओं का सुख भोग। (३७) तेजस्वी सूर्य के समान प्रकाशक विद्वानों को तेजस्वी ज्ञान दाता होने का आदेश। (३८) कवच, शस्त्रधर की मेघ से तुलना। (३९) धनुर्बल से विजय का उपदेश। (४०) प्रिय पत्नी के समान धनुष की डोरी की शक्ति। (४१) उसका शत्रुनाशकारी कार्य। (४२) पुत्र पिता की तूणीर से तुलना। (४३) घोड़ों की बागों का वर्णन। अध्यात्म रहस्य विवेक। (४४) वीरों का वर्णन। (४५) रथ का वर्णन। (४६) शक्तिमान् पालक वीर पुरुषों का वर्णन। (४७) विद्वान् ब्राह्मणों के लक्षण। (४८) तीव्र वाणों से सुख की आशा। उनका वर्णन। (४९) शरीर के कठोर होने का उपदेश। (५०) कशा का वर्णन। (५१) हाथबन्द कवच. और कुशल वीरका श्लेष से वर्णन। (५२) वनस्पति, धनुर्दण्ड और नायक का वर्णन। (५३) नाना दृष्टान्तों से सार भाग प्राप्त करने का उपदेश। (५४–५७) दुन्दुभि और वीर पुरुष का श्लिष्ट वर्णन। (५८–५९) भिन्न २ अधिकारियों के अधीन नियुक्त भिन्न २ भृत्यों के विभेदक चिन्ह और लक्षण। भिन्न २ उपसमितियों का कपाल भेद से भेद वर्णन। ८, ११, आदि 'कपालों' का रहस्य।

त्रिंशोऽध्यायः (४८५–५१५)

(१) ऐश्वर्य वृद्धि के लिये यज्ञ पति की स्थापना। वाणी के मधुर होने की प्रार्थना। सर्व प्रेरक सर्वोत्पादक प्रभु के तेज का ध्यान धारण और स्थापन। गायत्री। (३) उत्तमों के ग्रहण बुरों के त्याग का उपदेश। (४) अद्भुत ऐश्वर्य के विभाजक परमेश्वर और सर्वशासक राजा की स्तुति। (५–२१) ब्रह्म ज्ञान, क्षात्र बल, मरुद् (वैश्य) विज्ञान आदि नाना

ग्राह्य शिल्प पदार्थों की वृद्धि और उनके लिये ब्राह्मण, क्षत्रियादि उन २ पदार्थों के योग्यपुरुषों की राष्ट्र रक्षा के लिये नियुक्ति। त्याज्य कार्यों के लिये उनके कर्त्ताओं को दण्ड का विधान। (२२) अति विचित्र, विकृत पुरुषों की विशेष व्यवस्था।

एकत्रिंशोऽध्यायः (५१६–५३३)

पुरुष सूक्तम्। (१) सहस्रशिर, सहस्र आखों और सहस्र पाओं वाले पुरुष का वर्णन। इसका रहस्य। उसका भूमि को व्याप कर दश अंगुल ऊपर विराजने का रहस्य। (२) पुरुष, भूत, भव्य, अमृत के ईशान और अन्नातिरोही। (३) उसकी महिमा और चार पाद। त्रिपात् पुरुष का उत्क्रमण और मापन। (४) विराट् की उत्पत्ति। (६) यज्ञ प्रजापति से आज्यसम्भरण, पशुओं की उत्पत्ति। (७) यज्ञ परमेश्वर से समस्त वेदों की उत्पत्ति। उससे अश्वों और गवादि पशुओं की उत्पत्ति। (९) उस पुरुष का सर्वोपरि अभिषेक और विद्वानों द्वारा पूजा। (१०–११) पुरुष प्रजापति की विविध अंग कल्पना और वर्ण विषयक प्रश्न और उत्तर। (१२) चन्द्र सूर्य वायु अग्नि की कल्पना। (१३) अन्तरिक्ष, द्यौ, भूमि दिशा ओर लोकों की कल्पनायें। (१४) संवत्सर यज्ञ का स्वरूप। (१४) उसकी तीन परिधियें और सात समिधाएं। यज्ञपुरुष के बन्धन का रहस्य। (१६) यज्ञपुरुष से यज्ञकाण्ड का यजन। साध्य विद्वानों की परम सुख प्राप्ति। (१७) मानुष जीव सर्ग। (१८) आदित्य वर्ण पुरुष का वर्णन। (१९) समस्त भुवनों का आश्रय प्रजापति। (२०) ब्राह्मी रुक्। (२१) देवों का वश कर्त्ता विद्वान् ब्राह्मण। (२२) प्रजापति की दो पत्नी लक्ष्मी, और श्री। इनका रहस्य। समस्त अध्याय की राजपक्ष में योजना।

द्वात्रिंशोऽध्यायः (५३४–५४६)

(१) परमेश्वर के अग्नि आदित्य, वायु चन्द्रमा, शुक्र, ब्रह्म, आपः,

प्रजापति आदि नाना नाम। (२) उससे समस्त संसार की उत्पत्ति। (३) उसका कोई परिमाण नहीं। (४) उसका सर्वतोमुख वर्णन। उसका त्रिज्योति षोडषी स्वरूप। (६) सबका धारक प्रभु। (७) वह सबका संचालक और सूर्यादि का प्रकाशक। (८) वह सर्वाश्रय, सर्व व्यापक, सर्वत्र ओत प्रोत है। (९) उस परम प्रभु का ज्ञाता सबकें पिता का पिता है। (१०) वह सबका बन्धु, विधाता, सर्वज्ञ सर्व सुख प्रद अमृत है। (११) वह व्यापक ही प्रकृति में भी व्यापक है। (१२) तन्मय जगत्। (१३) अद्भुत सदसस्पति। (१४–१५) उससे मेधा बुद्धि की प्रार्थना। (१६) ब्रह्म, क्षत्र दोनों के लिये ऐश्वर्य की प्रार्थना। समस्त मन्त्रों की राजपक्ष में योजना।

त्रयस्त्रिंशोऽध्यायः (५४७–६०९)

(१–२) प्रजापालक विद्वान् अग्नियों का वर्णन। (३—४) विद्वान् मित्रों और श्रेष्ठों का आदर करने का उपदेश। सूर्य चन्द्र या अग्नि सूर्य के समान दो शक्तियों का संसारपालन। (६) विद्वान् की शिशु से तुलना। (७) ३३३९ देवों का रहस्य। (८) मूर्धन्य अग्रणी और परमेश्वर का वर्णन। (९) अग्रणी नायक का दुष्ट संहार करने का कर्तव्य। (१०) वायु सहित सूर्य के जलपान के दृष्टान्त से राजा की ऐश्वर्य प्राप्ति। (११) वीर्य सेचन से पुत्रोत्पत्ति के समान जल सेचन से अन्नादि और राज सामर्थ्य से बल की उत्पत्ति का वर्णन। (१२) सौभाग्य वृद्धि के लिये उत्तम ऐश्वर्यों को प्राप्त करने, दम्पति सम्बन्ध को सुदृढ़ करने और शत्रुओं के तेजों को जीतने का आदेश। (१३) तेजस्वी पुरुष का सूर्य और विद्युत् के समान वरण। (१४) पशुनाशकों के दण्डकर्त्ता जितेन्द्रियों के आदर करने का उपदेश। (१५) बहुश्रुत पुरुष को प्रजा के व्यवहारों को सुनने का आदेश। (१६) अग्रणी नायक सबको सुखकर और दयाशील हो। (१७) मुख्य पुरुष के उत्तम शासन में प्रजा निरपराध रहें और

यह प्रजा का अच्छा रक्षक रहे। (१८) जीवन वर्धक जलों के समान विद्वान जन प्रमुख पुरुष की वृद्धि करें। (१९) गौओं, रश्मियों, सूर्य पृथिवी के दृष्टान्त से स्त्री पुरुषों और राजा प्रजा के कर्तव्य। पक्षान्तर में उत्तम वचनों और आभूषणों से सजाने का उपदेश। (२१) मेध के समान उदार पुरुष को मुख्य पद पर स्थापन करने का उपदेश। (२२) शासक का आदर्श सूर्य। (२३) सर्वोपास्य परमेश्वर की उपासना। (२३) सूर्यवत् उत्साही नायक। (२४) नायक सेनापति को शत्रु नाश के नाना प्रकार के उपदेश। (२५–२७) सहसी पुरुष के कर्तव्य। (२८) राजा की स्तुति प्रजाओं को समृद्ध बनाने में है। पक्षान्तर में आचार्य का वर्णन। (२६) बलवान् का सहयोग। (३०–३२) मुख्य पदाधिकारियों का राष्ट्र को समृद्धिमान् बनाना। (३४) सभा, संग्रामों में उत्तम उपदेष्टा और आदेष्टा। (३५) संघ के वशकर्त्ता का सूर्यवत् उदय। (३५) उसका स्वरूप, उसका महान् सामर्थ्य। (३८) सूर्य के दृष्टान्त से परमेश्वर का वर्णन। उसके शुक्ल, कृष्ण दोनों प्रकार के रूपों का रहस्य। (३९–४०) महान् परमेश्वर। (४१) परमेश्वर के आश्रय पर कमाये धन के समान कर्म फल का भोग। (०२) विद्वानों का कार्य निन्दनीय कार्यों से बचना। पक्षान्तर में भौतिक तत्वों से उत्तम देह रचना। (४३) विजिगीषु नायक के कर्तव्य। (४४) वायु और सूर्य के दृष्टान्त से भागधुक् नाम अध्यक्ष के कार्य। (४५) विद्युत् आदि तत्वों का सदुपयोग। पक्षान्तर में राष्ट्र के अध्यक्षों के कर्तव्य। (४६) वरुण और मित्र दोनों के कर्तव्य। (४७) व्यापक अधिकारवान् पुरुष की अध्यक्षता। (४८) सब अध्यक्षों का राष्ट्र को प्रेम करना। (४६) रक्षा के लिये सबका आह्वान। (५०) उनका रक्षण कर्तव्य। (५०–५१) प्रजा का विद्वानों की शरण आना और रक्षा की याचना करना। (५२) विद्वानों को उत्तम आसन। (५३) परमेश्वर का विद्वानों के प्रति अपना स्वरूप प्रकाश। राजा का विद्वानों को ऐश्वर्य दान। (५५–५९) वायु, इन्द्र, वायु, अश्वी

चतुस्त्रिंशोऽध्यायः

पञ्चत्रिंशोऽध्यायः

षट्त्रिंशोऽध्यायः

(१—१७) शान्ति करण। (१८) मित्रदृष्टि। (१९) दीर्घ जीवन। (२२) अभय। (२३) शतवर्ष आयु की प्रार्थना।

सप्तत्रिंशोऽध्यायः

महावीर सम्भरण। (१—८) मुख्य शिरोमणि नायक की उत्पत्ति। (९) अश्व, शकृत् से धूपन का रहस्य। (१२) पृथ्वी निवासिनी प्रजा के कर्तव्य। (१४, १८) तेजस्वी रक्षक पुरुष का स्वरूप। (१९) वरण का प्रकार।

अष्टात्रिंशोऽध्यायः

(१—५) पृथ्वी स्त्री का समान वर्णन। (६) सार पदार्थ ग्रहण करने का उपदेश। (२७) विद्वान् के उद्देश्य और कर्तव्य।

एकोनचत्वारिंशोऽध्यायः (पृ० ७०८-७१८)

(१) प्राण, पृथिवी, अग्नि, अन्तरिक्ष, वायु, सूर्य आकाश इनको आहुति की प्राप्ति। (२) दिशा, चन्द्र आदि के समान व्यक्तियों का उत्तम आदर हो। (३) वाणी प्राण आदि का उत्तम उपयोग। (४) मन वाणी की शक्ति का उपयोग करने और समृद्धि की प्रार्थना। (५—७) प्रजापति प्रभु और परमेश्वर के नाना गुण कर्म स्वभावानुसार नाना नाम। (८-९) देवमय राजा। लोम त्वचादि देह धातुओं को स्वच्छ रोग रहित रखने का उपदेश। (११) आयास आदि देह और आत्मा के धर्मों के लिये उत्तम आहार व्यवहार। (१२) तप धर्मादि के लिये उत्तम यत्न करने का उपदेश। (१३) नियन्ता आदर परमेश्वर की उपासना।

चत्वारिंशोऽध्यायः (पृ० ७१९-७२८)

ईशोपनिषत्। (१) परमेश्वर व्यापक। उसके दिये के भोग करने और लोभ त्यागने का उपदेश। (२) जीवन भर निसंग होकर कर्म करने की आज्ञा। (३) आत्मा के नाशकों के दुर्गति। (४–५) आत्मा का स्वरूप। (६–७) सर्वत्र आत्म दर्शन। (८) आत्मा का स्वरूप। (९–११) सम्भूति और विनाशक दोनों का ज्ञान। उन दोनों की उपासना का फल मृत्यु मरण, और अमृत भोग। (१२—१४) विद्या अविद्या का ज्ञान। उन दोनों की उपासना फल। मृत्यु और वरण। (१५) देह और भौतिक जीवन की वास्तविकता। अन्त समय में 'ओ३म्' प्रभु का स्मरण। (१६)उत्तम मार्ग से चलने की भगवान् से प्रार्थना। सत्य तत्व पर हिरण्यमय आवरण। परम आत्म दर्शन। ब्रह्म में लय। मोक्ष प्राप्ति।

ग्रन्थ समाप्त

